RNI No.RAJHIN/2012/44901

Postal Reg. No. जयपुर सिटी/403-2024-26

निवेश पत्रिका

निवेश करें लगातार, सपने करें साकार

वर्ष : 12 अंक 8 www.mftoday.com हिन्दी मासिक जयपुर, 1 फरवरी 2024 कुल पृष्ठ : 8 मूल्य : 10 रुपए email : niveshpatrika@mftoday.com

लॉन्ग टर्म इन्वेस्ट की हैबिट से फ्यूचर करें सिक्योर

यदि आप बड़ी संपत्ति बनाना चाहते हैं तो सबसे अच्छा तरीका होगा छोटी राशि का नियमित निवेश करने की आदत विकसित करना है। लगातार निवेश की आदत आपको भविष्य में बेहतर वित्तीय स्थिति में लाएगी।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि शुरू कहां से करें। निवेशकों को इस पर विचार करने पर समय बर्बाद करना बंद करना चाहिए क्योंकि विचार करने से आपको कुछ नहीं मिलने वाला। इस बिंदु पर, आपको प्रक्रियाओं के बारे में बहुत अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आगे बढ़ते हुए सब कुछ आपको समझ आने लगेगा। अभी के लिए, आपको शेयर बाजार की कुछ मूल बातों और रणनीतियों को जानना होगा। शुरुआत के लिए, यह पता लगाएं कि आप कितना निवेश करने के इच्छुक हैं और निवेश के लिए अपने लक्ष्य को तय करें। इसके बाद, आप एक म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर के साथ बात करके आगे बढ़ सकते हैं और अपना निवेश शुरू कर सकते हैं।

अब अपने निवेश के लिए बजट तय कर सकते हैं और बुनियादी जानकारी हासिल कर सकते हैं और निवेश शुरू कर सकते हैं।

जोखिम सहन करने की क्षमता को समझना जरूरी

आप अपनी जोखिम को सहन करने की क्षमता और समझ का आकलन करके इस निवेश यात्रा को सुखद बना सकते हैं जहां आप जोखिमों के बीच होते हैं। एक निवेशक के रूप में आपके व्यक्तित्व के साथ यह परिचितता आपको अपनी निवेश यात्रा की निगरानी करने में मदद करेगी। उदाहरण के लिए, अपनी जोखिम सहन करने की क्षमता को समझकर, आप कुछ लेन-देन से बच सकते हैं जो आपको बाद में चिंतित कर सकते हैं। साथ ही, यह आपको स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करने में भी मदद करेगा जहां आप जोखिम उठा सकते हैं।

भावनाओं पर नियंत्रण रखें, आवेगी निर्णयों से बचें

आप अपने निवेश को लेकर भावनात्मक क्षणों का सामना करने के लिए बाध्य हैं। आप अक्सर पैसा बनाने और मौका खोने के विचारों से लगातार घिरे रहेंगे। ऐसे समय में, आपको भावनाओं में बहकर निर्णय नहीं लेना चाहिए। यह विचार गणना के आधार पर होने चाहिए और अच्छा प्रॉफिट बुक करने के लिए डर या क्षणिक आग्रह से प्रेरित निर्णय लेने से बचें।

निवेश में विविधता लाना है बेहद जरूरी

अपने निवेश में विविधता लाना एक बैकअप प्लान है। इसलिए, यह आपके निवेश करियर में एक अभिन्न तत्व होना चाहिए। यह किसी सेक्टर की प्रतिकूल स्थितियों से आपके निवेश की रक्षा करता है।

एक तरह से, विविधता नुकसान के खिलाफ आपकी ढाल है। सुनिश्चित करें कि आप न केवल अलग-अलग क्षेत्रों में, बल्कि उनके भीतर भी और संभव होने पर वस्तुओं और बांडों में भी विविधता लाएं।

कभी-कभी निवेश की यात्रा उतार-चढ़ाव भरी हो सकती है क्योंकि हर बार आर्थिक गतिविधियों में उतार-चढ़ाव होते हैं। इस वजह से एक ऐसी व्यवस्था का होना बहुत ज़रूरी है जो आपको बाजार की मंदी में अपनी सारी संपत्ति खोने से बचाए।

आखिर में, आपके द्वारा बुक की गई राशि पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करती है कि आप निवेशक के रूप में कितने चतुर हैं। आपके अंतिम-परिणाम आपके यात्रा के दौरान आपके छोटे और बड़े दोनों निर्णयों द्वारा निर्धारित होंगे। ऐसा करने के लिए हमेशा कोशिश की जानी चाहिए कि ऊपर जो रणनीतियों बताई गई है, उनका सख्ती से पालन करें।

लंबी अवधि का विकल्प चुनें

अब जब आपने पहला कदम उठा लिया है, तो लंबी अवधि में निवेश करना एक ऐसी चीज है जिस पर आपको गंभीरता से विचार करना चाहिए। इस बीच, यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने लक्ष्य को जानें और भविष्य में आपको पैसों की आवश्यकता पड़ने पर अस्थायी विचार करें। लंबी अवधि में निवेश करने से अच्छे रिटर्न मिल सकते हैं क्योंकि आप बाजार के अल्पकालिक उतार-चढ़ाव से प्रभावित नहीं होंगे।

निरंतरता है जरूरी

इस यात्रा में निरंतरता आपको बहुत दूर तक ले जा सकती है। आप देखें, निवेश के लिए लगातार प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता होती है। एक निवेशक के रूप में आपको सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए नियमित और सुसंगत रहना होगा। यहां, नियमित राशि की बचत और नियमित रूप से निवेश प्रमुख है। और, यदि आप निर्धारित सप्ताह में अलग से फंड नहीं डाल सकते हैं, तो आने वाले सप्ताह में इसके लिए प्रयास करें।

इनसाईड स्टोरी

2
प्रभु श्रीराम से सीखें फाइनेंशियल प्लानिंग के मंत्र...

3
मार्केट चढ़े या गिरे.... कभी नहीं डूबेगा आपका पैसा! 70:20:10 का नियम...

4
क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल पर चाहिए अधिक फायदे...

5

लोन लेते और चुकाते समय इन 5 बातों का रखें ध्यान...

6

धमाकेदार रिटर्न के साथ टैक्स फ्री इनकम का फायदा उठाने ...

7
हर व्यक्ति को जरूर करने चाहिए ये 5 काम, ताकि आपके...

8
इस 'वैलेंटाइन डे' पर अपने पार्टनर को दें खास...

अपनी बचत को सही निवेश कर अपने गोल को पूरा करने हेतु सम्पर्क करें: - 8287 099 099

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

प्रभु श्रीराम से सीखें फाइनेंशियल प्लानिंग के मंत्र

अयोध्या में रामलला विराजमान हो गए हैं। दुनिया की इसकी गवाह बनी। ये ऐतिहासिक और अलौकिक क्षण दुनिया को काफी कुछ सीख दे गया। भगवान श्रीराम को धैर्य, मर्यादा और योजना बनाकर विजय हासिल करने वाला कहा जाता है। उनके यही गुण मनी मैनेजमेंट के गुर सिखाते हैं। श्रीराम सिखाते हैं कि कैसे चुनौतियों से लड़ा जाता है और कैसे उनसे निपटा जाता है। आज के युग में फाइनेंशियल प्लानिंग के मंत्र को सीखने के लिए श्रीराम से प्रेरणा लेनी चाहिए। अगर उनके मंत्र को अपना लिया तो आपकी कमाई की रक्षा खुद भगवान करेंगे और आप धनवान बन जाएंगे।

1. 'संजीवनी' के लिए हनुमान नहीं आएंगे

इंश्योरेंस लें रावण से युद्ध के दौरान श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण मूर्छित हो गए थे, तो उन्हें बचाने के लिए राम भक्त हनुमान संजीवनी बूटी ले आए थे। लेकिन, इस युग में संजीवनी कौन लाएगा खुद हनुमान नहीं आएंगे। आज के युग में ये संजीवनी बूटी हेल्थ इंश्योरेंस है, जो आपको ऐसे किसी संकट से निकालने में मदद करती है। इंश्योरेंस जिंदगी भर साथ निभाता है। और कुछ मामलों में जिंदगी के बाद भी आपके परिवार को आर्थिक सुरक्षा देता है। इलाज के खर्च, सेविंग्स खत्म होने और मृत्यु के बाद आपके परिवार की वित्तीय सहायता देता है। इसलिए हेल्थ इंश्योरेंस ही आज की संजीवनी है।

2. मुश्किल घड़ी में संयम व धैर्य रखे

श्रीराम को भी अपने राजतिलक से पहले 14 साल के लिए वनवास काटना पड़ा था। लेकिन, उन्होंने अपने संयम और धैर्य के साथ कर्तव्य मानकर पूरा किया। श्रीराम के ये गुण हमें सिखाते हैं कि बाजार के उतार चढ़ाव जैसी घड़ी में संयम व धैर्य बनाये रखे।

3. लक्ष्मण रेखा पार न करें- बजट बनाएं

श्रीराम से हमें अनुशासन सीखना चाहिए। आपको अपनी वित्तीय सुरक्षा के लिए बजट जरूर तैयार करना चाहिए। बजट से खर्च और बचत को मैनेज करने में मदद मिलती है। इससे जीवन में वित्तीय स्थिरता आती है। अगर बजट की लक्ष्मण रेखा पार की तो मुश्किल खड़ी हो सकती है। लक्ष्मण रेखा की तरह बजट की रेखा (लिमिट) तय करनी चाहिए। इससे वित्तीय अनुशासन आएगा।

4. एक ही हिरण के पीछे न भागें- डायवर्सिफाई पोर्टफोलियो

श्रीराम का जीवन हमें निवेश की बारीकियां भी समझाता है। सीता ने राम से हिरण पकड़ने को कहा तो वह उसे पीछे दौड़े। कुछ देर बाद लक्ष्मण भी उनके पीछे गए। इसी बीच रावण का हरण हो गया। ये हमें सिखाता है कि निवेश को हमेशा डायवर्सिफाई रखें। पोर्टफोलियो को ऐसे तैयार करें, जहां नुकसान होने की संभावना कम हो। एक जगह सारा पैसा निवेश न करें। अलग-अलग जगह निवेश से ज्यादा रिटर्न की संभावना होती है।

मार्केट चढ़े या गिरे.... 70:20:10 का नियम देगा शानदार रिटर्न

'जब दूसरों को बाजार में डर लग रहा हो तो लालची बनें और जब दूसरों का लालच बढ़ रहा हो तो शेयर बेच दें।' यही स्ट्रैटेजी बाजार में काम आती है। और गब्बर सिंह ने भी कहा है- 'जो डर गया समझो वो मर गया।..' शेयर बाजार में यही काम आता है। अगर निवेश की बारीकियां न पता हों तो दिल गलती कर बैठेगा। जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर धोखा दे सकते हैं। ये हम नहीं, दुनिया के जाने-माने निवेशक और सबसे अमीर लोगों में शामिल वॉरेन बफेट का मानना है। बफेट की सलाह है कि निवेशकों को लंबी अवधि के लिए निवेश पर फोकस करना चाहिए। छोटी अवधि में पैसा कमाने की सोच को बदलना होगा।

बाजार रिवॉर्ड जरूर देगा

वारेन बफे का एक कथन पढ़ लीजिए- 'अगर शेयर बाजार 10 साल के लिए बंद हो जाए तो शेयर (लॉन्ग टर्म वाले) खरीदने चाहिए जिसे रखकर आपको पूरी तरह सुकून मिले।' बफे का मानना है कि शेयर बाजार लंबी अवधि में हमेशा ऊपर की तरफ ही बढ़ता है। जिन निवेशक ने समय के साथ बाजार में अपने निवेश को लंबे समय तक बनाए रखा है, ये उन्हें रिवॉर्ड जरूर देता है।

डायवर्सिफाई पोर्टफोलियो देगा मजबूती की नींव

एक्सपर्ट्स की मानें तो पोर्टफोलियो हमेशा डायवर्सिफाइड होना चाहिए। एक ही जगह निवेश न करें। सारा पैसा एक ही जगह डाल देंगे तो पैसा डूबने का खतरा रहेगा। वहीं, अलग-अलग निवेश आपके पोर्टफोलियो को हर स्थिति में मजबूती देने का काम करेगा। जाहिर है किसी भी परिस्थिति में आपका पैसा डूबेगा नहीं। क्योंकि, अगर एक जगह गिरावट होगी तो दूसरा उसके नुकसान की भरपाई के लिए खड़ा रहेगा। लेकिन, सवाल ये है कि कहां निवेश किया जाए कि पैसा डूबे भी नहीं और नुकसान की भरपाई के लिए दूसरा निवेश बढ़ता भी रहे।

जाने, कैसे चमकता रहेगा आपका पोर्टफोलियो

बाजार भले ही लाल हो या फिर हरा।। लेकिन आपका पोर्टफोलियो चमकता रहे, इसके लिए निवेश को बांटने का सबसे सटीक फॉर्मूला समझना होगा। अपने पैसे को कहां किस कैटेगरी में और कितना लगाएं जाने, ये इन फॉर्मूलों से पता चलता है।

1. पहला तरीका- 60:40

अपना पैसा 60 फीसदी इक्विटी में डालें और 40 फीसदी पैसा डेट में लगाएं। लेकिन, ये तरीका काफी पुराना हो चुका है। पिछले कई साल से यह उतना कारगर नहीं रह पाया। इसलिए बड़े दिग्गज इसमें पैसा नहीं लगाते हैं।

2. दूसरा तरीका- 70:20:10

सबसे पॉपुलर या यूं कहें कि आज के वक्त का सबसे सटीक फॉर्मूला। 70 फीसदी इक्विटी, 20 फीसदी डेट, 10 फीसदी गोल्ड में लगाना चाहिए। एक्सपर्ट्स की मानें तो गोल्ड निवेश का एक शानदार ऑप्शन है। खासकर आपात स्थितियों में गोल्ड का कोई तोड़ नहीं है। पोर्टफोलिया महज 10 फीसदी गोल्ड भी टूटते मार्केट में पोर्टफोलियो को मजबूती देगा।

3. तीसरा तरीका- 60:30:10

60 फीसदी इक्विटी, 30 फीसदी डेट और 10 फीसदी गोल्ड में निवेश का ये नियम सामान्य है। लेकिन, अस्थिरता के दौर और वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए ये सामान्य तरीका है।

4.चौथा तरीका- 50:40:10

सलाह दी जाती है कि कभी भी अपने निवेश को बराबर हिस्सों में न बांटे। अगर 50 फीसदी इक्विटी और 40 फीसदी डेट में रखेंगे तो ये लगभग बराबर ही होगा। ऐसे में नुकसान की रिकवरी कम ही होती है। वहीं, ऐसी स्थिति में 10 फीसदी गोल्ड भी आपकी मदद नहीं करेगा। आपका पोर्टफोलियो भी खराब हो सकता है।

5. पांचवा तरीका- 50:30:20

कई बार लोग इक्विटी, डेब्ट और गोल्ड में निवेश के लिए 50:30:20 का रूल अपनाते हैं, जो मार्केट के उतार-चाव में ठीक नहीं होता। इक्विटी मार्केट में निवेश से पहले ये आकलन करना जरूरी है कि बाजार से आप कितना रिस्क उठा सकते हैं।

तो कौन सा तरीका रहेगा बेस्ट

एक्सपर्ट के अनुसार, मार्केट के उतार-चढ़ाव और वैश्विक चुनौतियों के बीच निवेश मुनाफा ही कमा कर देगा इसकी गारंटी नहीं है। इसलिए निवेश को बांटना ज्यादा जरूरी है। 60:40 के बजाए पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करके 70:20:10 के फॉर्मूले अपनाएं। इससे आपका पैसा कभी डूबेगा नहीं।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल पर चाहिए अधिक फायदे, अपनाएं ये जरूरी टिप्स

क्रेडिट कार्डस फाइनेंशियल लैंडस्केप का एक अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। यह हमारे वित्तीय लेनदेन की प्रक्रिया को आसान और फ्लेक्सिबल प्रदान करते हैं। क्रेडिट कार्ड के बेनिफिट को अधिकतम करने के लिए रणनीतिक योजना और समझदारी से इस्तेमाल की जरूरत होती है। क्रेडिट कार्ड के फीचर्स के बारे में जानना जरूरी है। कई कार्ड कैशबैक, रिवॉर्ड पॉइंट या ट्रैवल मील जैसे तमाम लाभ देते हैं। क्रेडिट कार्ड के साथ आने वाले स्पेसिफिक फायदों से परिचित रहने पर इन बेनिफिट के दायरे को अधिकतम करने में मदद मिलेगी और प्लानिंग के तहत खर्च करने पर ज्यादा से ज्यादा फायदे उठाए जा सकते हैं। क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल को ज्यादा से ज्यादा फायदेमंद बनाने के लिए यहां कुछ सरल टिप्स बताए गए हैं। आइए जानते हैं।

खर्च के लिए सेट कर लें बजट

क्रेडिट कार्ड के इस्तेमाल को अनुकूलित करने के लिए बेहद जरूरी है बजट सेट करना। किराने का सामान, भोजन और मनोरंजन जैसी तमाम कैटेगरी के लिए अपनी मंथली खर्च की लिमिट तय कर लें। राजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए होने वाले खर्च का बजट बनाकर चलने के फायदे हैं। यह सुनिश्चित करता है कि आप अपने वित्तीय साधनों के भीतर रहें और अनावश्यक कर्ज या लोन लेने से बचें।

रिवार्ड्स जैसे बेनिफिट के लिए समझदारी से करें इस्तेमाल

मौजूदा समय में क्रेडिट कार्ड रिवार्ड स्कीम के साथ आते हैं। ऐसे कार्ड के इस्तेमाल पर कैशबैक, डिस्काउंट या लॉयल्टी प्वाइंट मिलते हैं। इस तरह के क्रेडिट कार्ड को प्लानिंग के तहत समझदारी से इस्तेमाल करने पर फायदे मिलते हैं। यूजर के लिए नसीहत है कि वे उन कैटेगरी वाले चीजों पर खर्च अपने क्रेडिट कार्ड का इस्तमाल करें जहां सबसे अधिक रिवार्ड मिल सकते हैं। किराना स्टोर से खरीदारी करने पर कैशबैक मिले या अन्य खर्चों पर प्वाइंट इकट्ठा हो, इन बेनिफिट स्कीम का लाभ उठाने से क्रेडिट कार्ड की वैल्यू बढ़ती है।

क्रेडिट यूटिलाइजेशन रेशियो करें मेंटेन

क्रेडिट स्कोर के लिए क्रेडिट यूटिलाइजेशन बेहद फैक्टर अहम है। बेहतर क्रेडिट प्रोफाइल बनाए रखने के लिए अपने क्रेडिट यूटिलाइजेशन रेशियो (ष्ट) को 30 से कम रखने का लक्ष्य रखें।

यह न सिर्फ आपके क्रेडिट स्कोर में सुधार करता है बल्कि भविष्य में बेहतर फाइनेंशियल प्रोडक्ट्स के मौके भी खोलता है।

क्रेडिट कार्ड स्टेटमेंट पर हमेशा रखें नजर

क्रेडिट कार्ड स्टेटमेंट की नियमित निगरानी करनी चाहिए और इसके प्रति सजग रहना चाहिए। किसी भी अनधिकृत लेनदेन या बिलिंग एरर की जांच करें। ट्रांजेक्शन में गड़बड़ी मिलने पर फौरन उसके बारे में रिपोर्ट करें। आदिल सेट्टी बताते हैं कि क्रेडिट कार्ड स्टेटमेंट की निगरानी यह सुनिश्चित करती है कि आप अपने खर्च के पैटर्न से परिचित हैं। और ऐसा करके आप किसी तरह की बड़ी परेशानी आने से पहले ट्रांजेक्शन में हुईं गड़बड़ी के बारे में जान सकते हैं।

कैश निकासी से बचें

कैश एडवांस आमतौर पर हाई फीस और अधिक ब्याज दर के साथ आते हैं। इससे बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप अपने क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कैश निकासी के लिए बिल्कुल न करें अगर कोई इमरजेंसी जैसी स्थिति न हो तो। अगर आपको कैश की जरूरत पड़ ही जाए तो संबंधित खर्चों को कम करने के लिए उपलब्ध दूसरे विकल्पों का इंतजाम करें।

इंट्रोडक्टरी ऑफर का समझदारी से करें इस्तेमाल

कई क्रेडिट कार्ड जीरो इंटरेस्ट बैलेंस ट्रांसफर या शुरूआती बोनस रिवार्ड जैसे इंट्रोडक्टरी ऑफर के साथ आते हैं। कार्ड पर लागू नियमों और शर्तों को ध्यान में रखकर इनका लाभ उठाएं। ऑफर के एक्सपायरी डेट और उससे जुड़े किसी भी संभावित चार्ज के बारे में भी अच्छी तरह से समझ लें।

अधिकतम लाभ के लिए कई कार्ड भी कर सकते हैं इस्तेमाल

एक से अधिक क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करना एक रणनीतिक कदम हो सकता है। अलग-अलग कार्ड किसी खास कैटेगरी के खर्च पर रिवार्ड ऑफर करते हैं। मिसाल के तौर एक कार्ड ट्रैवल खर्च के लिए बेहतर रिवार्ड दे सकता है, तो दूसरा रोजमर्रा की खरीदारी के लिए कैशबैक ऑफर करता है। बेहतर प्लान और समझदारी के साथ कई क्रेडिट कार्ड्स का इस्तेमाल कर तमाम कैटेगरी के खर्चों पर अधिक बेनिफिट भी लेने में मदद मिल सकती है।

एन्युअल चार्ज को लेकर कंपनियों से करें बातचीत

अगर क्रेडिट कार्ड देने वाली कंपनी बदले में एन्युअल चार्ज करती है, तोबिना संकोच के कई कंपनियों के कार्ड स्कीम की आपस में तुलना करें। ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इस वक्त कई क्रेडिट कार्ड कंपनियां कुछ शर्तों के साथ एन्युअल फीस माफ करने या कम करने के लिए तैयार होती हैं, खासकर तब जब यूजर लंबे समय से स्थायी और जिम्मेदार ग्राहक रहा हो। ग्राहक सेवा के लिए एक साधारण कॉल के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण बचत हो सकती है।

बढ़ती महंगाई से बचने के लिए अपनाएं ये तरीके और करें बचत

बढ़ती महंगाई से आम लोगों के लिए घर चलाना मुश्किल हो रहा है। बढ़ी महंगाई के अनुपात में आय नहीं बढ़ी है। इसके चलते कम आय वाले लोगों को घर का प्रबंधन करना मुश्किल हो रहा है। अगर, आप भी इस तरह की परेशानी का सामना कर रहें तो ये आसान

1. 50:30:20 में बदलाव दे सकता है राहतः हमारी मासिक आय के खर्च में तीन चीजें शामिल होती है। पहली आवश्यकताएं, दूसरी इच्छाएं और तीसरी बचत। अगर हम इन तीनों का सही अनुपात में प्रबंधन करते हैं तो हम बढ़ती महँगाई के असर को कुछ हद कम कर सकते हैं। 50 प्रतिशत अकसर जरूरतों को पूरा करने में खर्च हो जाता है। हम चाहे तो इसमें थोड़ा बदलाव कर या अपनी आवश्यकताओं में कम से कम 10 प्रतिशत तक की कटौती कर इसे 40 प्रतिशत पर ला सकते हैं। 30 प्रतिशत वाले इच्छाओं के खर्च को संतुलित करना। इसलिए इसको 5-10 प्रतिशत तक कम करना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए की इसे 20 प्रतिशत तक स्थिर रखा जाए। 20 प्रतिशत आम तौर पर बचत और निवेश में जाता है। आय का यह वह हिस्सा है जिस पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसे 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 30-40 प्रतिशत तक करना चाहिए।

2. लोन की ईएमआई को कम करने पर जोरः अगर आपने अपने लोन की जरूरत के लिए अपना घर या संपत्ति गिरवी रखा है, तो आप अन्य बैंकों/एनबीएफसी से कम ब्याज दर प्राप्त करने के लिए इसे पुनर्वित्त कर सकते हैं, जो आपके मौजूदा मॉर्गेज लोन के लिए आपको ऋण हस्तांतरण सुविधा दे सकते हैं। जब महंगाई अधिक होती है तो आरबीआई आम तौर पर ऐसे ऋणों पर ब्याज दर में कटौती करता है, किसी भी बैंक/एनबीएफसी पोर्टल पर जाने और उनके मॉर्गेज लोन कैलकुलेटर का लाभ उठाकर देखा जा सकता है कि ईएमआई ब्याज में कितनी बचत हो सकती है।

3.ट्रांसपोर्ट पर होने वाले खर्च को कम करें

जब महंगाई बढ़ रही होती है तब तेल/पेट्रोलियम की कीमतें भी बढ़ जाती हैं। इसलिए आप अपनी कार/बाइक का उपयोग प्रतिदिन कार्यालय आने-जाने के लिए करते हैं तो आपकी जेब पर इसका अतिरिक्त बोझ पड़ता है। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने का प्रयास करें।

4. अपनी आय के जरिए को बढ़ाएंः पेशेवर कौशल में नई चीजें जोड़ेज वर्तमान जॉब में बदलाव करके भी आय में कुछ वृद्धि की जा सकती है।

5. ब्रांड के चक्कर मे ज्यादा ना पड़ेः हर कोई व्यक्ति अब ब्रांडेड चीजों पर ज्यादा जोर देने लगा है, मगर इसके चक्कर में जेब पर अनचाहा असर पड़ता है।

6. घर के खाने को दे तरजीहःघर का खाना आपके सेहत के साथ-साथ आपके जेब की सेहत के लिए भी ठीक है इसलिए जितना हो सके घर के खाने को तरजीह दें।

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

लोन लेते और चुकाते समय इन 5 बातों का रखें ध्यान, ताकि मुसीबत न बन जाए कर्ज का बोझ

अचानक कोई जरूरत पड़ जाए या घर, कार जैसी महंगी चीजें खरीदनी हों, तो लोन सभी लेते हैं। नई तकनीक के इस्तेमाल ने तो कर्ज लेना पहले से काफी आसान बना दिया है। लिहाजा, लोग भी आसान क्रेडिट की इस सुविधा का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर करने लगे हैं। जरूरत के वक्त लोन लेने में वैसे तो कोई गलत बात भी नहीं है। लेकिन कर्ज लेते समय या उसे चुकाने के दौरान कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है, ताकि आगे चलकर आपको कोई परेशानी न हो। हम यहां आपको ऐसी ही कुछ बातों के बारे में बताएंगे, जिन पर अमल करके आप अपने लोन लेने और चुकाने के अनुभव को किसी मुसीबत में तब्दील होने से बचा सकते हैं।

1. कर्ज उतना ही लें, जितना आसानी से चुका सकें

आपको कर्ज हमेशा उतना ही लेना चाहिए, जितना आप आसानी से चुका सकते हों। लोन भले ही कितनी भी आसानी से मिल रहा हो, लेकिन आखिर वो है तो कर्ज ही, जिसे आपको देर-सबेर चुकाना ही है। इसलिए अपनी रीपेमेंट की क्षमता से ज्यादा कर्ज लेने से बचना चाहिए। अगर आपकी आमदनी का बड़ा हिस्सा कर्ज की किस्तें (EMI) चुकाने में चला जाएगा, तो आपकी सारी फाइनेंशियल प्लानिंग बिगड़ने का खतरा है। आमतौर पर माना जाता है कि आपकी होमलोन (Home Loan) की ईएमआई आपकी मंथली इनकम के 35-40 फीसदी से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। वहीं, कार लोन या पर्सनल लोन (Pesonal Loan) की ईएमआई का हिस्सा आपकी मासिक आय के 10 फीसदी से भी कम रहे तो ही बेहतर है।

2. कर्ज की अवधि कम से कम रखें

कर्ज लेने का फैसला करते समय अक्सर लोग ये देखते हैं कि उसकी ईएमआई कितनी बनेगी और ऐसा करना बिलकुल सही भी है। लेकिन गलती तब हो जाती है, जब क्षमता से ज्यादा लोन लेने के चक्कर में लोग कर्ज की अवधि बढ़ाकर ईएमआई कम करने की कोशिश करते हैं। लेकिन कर्ज की रकम और ब्याज दर (Interest Rate) अगर बराबर है तो ईएमआई कम रखने के लिए लोन की अवधि बढ़ाना हमेशा समझदारी भरा फैसला नहीं होता। ऐसा करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि कर्ज चुकाने में आप जितना ज्यादा वक्त लगाएंगे, ब्याज का बोझ उतना ही बढ़ता जाएगा। होम लोन जैसे कर्ज के मामले में अगर आप शुरुआत में अपनी कम इनकम के कारण ज्यादा अवधि का चुनाव कर भी लेते हैं, तो भी आगे चलकर ईएमआई बढ़ाने की कोशिश करें, ताकि लोन को कम से कम समय में चुकाया जा सके। अगर आपके कई लोन चल रहे हैं, तो सबसे पहले उस लोन को निपटाने की कोशिश करें, जिसकी ब्याज दर सबसे ज्यादा है।

3. बेहतर ब्याज दर की तलाश जारी रखें

होम लोन जैसे लंबी अवधि के कर्ज लेकर भूल न जाएं। अगर आपको होम लोन पर काफी ऊंची ब्याज दर चुकानी पड़ रही है, तो उसे कम करवाने की कोशिश करें। खासतौर पर अगर आपके लोन लेने के बाद बाजार में ब्याज दरों में नरमी आई है, तो आपको उसका लाभ उठाने की कोशिश जरूर करनी चाहिए। इसके लिए सबसे पहले आपको अपने मौजूदा बैंक या एनबीएफसी से बात करके देखना चाहिए। अगर इससे बात न बने, तो दूसरे बैंकों से संपर्क करके लोन का बैलेंस ट्रांसफर करने पर विचार करना चाहिए। लंबी अवधि के लोन की ब्याज दर में आई थोड़ी भी कमी ब्याज के बोझ को काफी कम कर सकती है।

4. रीपेमेंट में लापरवाही न बरतें

कर्ज कोई भी हो, उसकी ईएमआई को नियमित रूप से चुकाने पर हमेशा ध्यान देना चाहिए। कर्ज के भुगतान में लापरवाही बरतना लंबे अरसे में आपकी फाइनेंशियल हेल्थ के लिए बेहद नुकसानदेह हो सकता है। क्योंकि ऐसा करने पर आपको जुर्माने के तौर पर एक्स्ट्रा पेमेंट करना पड़ सकता है या ज्यादा ब्याज (Penal Interest) देना पड़ सकता है। इससे आपका क्रेडिट प्रोफाइल और सिबिल स्कोर भी बिगड़ जाता है, जिसके कारण आपको आगे चलकर और भी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

5. शौक, फिजूलखर्ची या बाजार में निवेश के लिए कर्ज लेने से बचें

एक बात हमेशा याद रखें। कर्ज लेना तभी वाजिब है, जब आप किसी जरूरी काम के लिए ऐसा कर रहे हों। सिर्फ किसी महंगे शौक या फिजूलखर्ची के लिए या फिर कर्ज लेने में जरा भी समझदारी नहीं है। इसी तरह शेयर मार्केट जैसे उतार-चढ़ाव वाले निवेश के लिए कर्ज लेना भी सही नहीं है। इसके लिए तो आपको अपने एक्स्ट्रा फंड का ही इस्तेमाल करना चाहिए। लोन लेना तभी वाजिब है, जब उसका इस्तेमाल आप किसी जरूरत के लिए कर रहे हों। मिसाल के तौर पर महानगर में रहने वाले लोगों के लिए कार जरूरत की चीज हो सकती है, लेकिन अगर आपका काम किसी सामान्य कार से चल सकता है, तो क्षमता से बाहर होने पर भी सिर्फ दिखावे के लिए ज्यादा कर्ज लेकर महंगी लग्जरी कार खरीदना समझदारी भरा फैसला नहीं हो सकता।

*निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

धमाकेदार रिटर्न के साथ टैक्स फ्री इनकम का फायदा उठाने के लिए ELSS में करें निवेश

म्यूचुअल फंड- इक्विटी लिंकड सेविंग स्कीम (ELSS) में निवेश न सिर्फ रिटर्न देगा, बल्कि टैक्स भी बचाएगा। इसमें निवेश पर आपको इनकम टैक्स के सेक्शन 80C के तहत 1.5 लाख रुपए तक पर टैक्स छूट मिलती है।

पैसा लगाया है तो रिटर्न भी चाहिए और सिर्फ रिटर्न नहीं धमाकेदार रिटर्न चाहिए। ऐसे में काम आते हैं म्यूचुअल फंड्स। लेकिन, क्या इक्विटी म्यूचुअल फंड (MF) में निवेश पर टैक्स छूट मिलेगी? अक्सर ये सवाल जहन में रहता है। जवाब है हां और ना दोनों। दरअसल, हर म्यूचुअल फंड (Mutual Fund) से टैक्स नहीं बचेगा, लेकिन एक खास तरह के म्यूचुअल फंड- इक्विटी लिंकड सेविंग स्कीम (ELSS) में निवेश न सिर्फ रिटर्न देगा, बल्कि टैक्स जरूर बचाएगा। इस निवेश पर आपको इनकम टैक्स के सेक्शन 80C के तहत 1.5 लाख रुपए तक पर टैक्स छूट मिलती है। अगर किसी एक फाइनेंशियल ईयर में आपके 80C में इन्वेस्टमेंट पूरे नहीं हो रहे हैं तो ELSS में निवेश बढ़िया ऑप्शन है। अगर आपने अभी तक इस इंस्ट्रूमेंट को पोर्टफोलियो में शामिल नहीं किया है तो 2024 से नए फाइनेंशियल ईयर की प्लानिंग में इसे जरूर शामिल करें। इसमें डबल फायदा उठा सकते हैं।

कैसे मिलेगा डबल फायदा?

ELSS टैक्स सेविंग इक्विटी म्यूचुअल फंड है। इन फंड्स का 80 फीसदी निवेश इक्विटी- शेयर्स में होता है। बाकी म्यूचुअल फंड्स की तरह ELSS इन्वेस्टमेंट पर भी आपको रिटर्न मिलता है। लेकिन, सभी म्यूचुअल फंड इन्वेस्टमेंट पर टैक्स छूट नहीं होती। ELSS- साधारण म्यूचुअल फंड्स से अलग है। इस फंड में जितना पैसा लगाएंगे उस पर टैक्स छूट मिलेगी। चाहे SIP करें या एकमुश्त रकम जमा कर दें। निवेश की रकम को इनकम टैक्स के सेक्शन 80C में छूट के लिए क्लेम कर सकते हैं।

लॉक-इन पीरियड का रखें ध्यान

टैक्स सेविंग के लिए अगर ELSS में निवेश कर रहे हैं तो इनमें 3 साल का लॉक-इन पीरियड रहता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, अगर आप Lump Sum निवेश करेंगे तो 3 साल बाद ही इसे निकाल सकते हैं। लेकिन, अगर SIP करेंगे तो हर SIP 3 साल के साइकिल में मैच्योर होगी। 3 साल के बाद हर एक महीने एक SIP मैच्योर होगी।

अगर रिटायरमेंट स्कीम में निवेश किया है तो यह लॉक-इन अवधि 3 की जगह 5 वर्ष की हो जाती है।

LTCG बचाने की ट्रिक

ELSS में तभी निवेश करें जब आपको उन पैसों की कोई जरूरत न हो। इसे रिडीम करने के लिए आपकी स्ट्रैटेजी ये होनी चाहिए कि जब फंड के 4 साल पूरे हों तो पहले साल के पेमेंट को निकाल लें। फिर 5वें साल में दूसरे साल का पैसा निकाल सकते हैं। इससे आप कैपिटल गेन टैक्स भी बचा पाएंगे। क्योंकि, अगर गेन्स 1 लाख से ज्यादा होगा तो 10% का लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन टैक्स भी देना होगा।

टैक्स छूट के लिए क्या करें?

हर फाइनेंशियल ईयर में टैक्स छूट के लिए स्टेटमेंट आफ पेमेंट दिखाना होगा कि आप ELSS में निवेश कर रहें हैं।

PPF से बेहतर क्यों है ELSS?

ELSS की तुलना अक्सर पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF) से होती है। क्योंकि, PPF पूरी तरह टैक्स-फ्री है और ELSS में 1 लाख रुपए से ज्यादा के मुनाफे पर LTCG लगता है। पहले तो ये समझना होगा कि दोनों के रिटर्न में अंतर है। ELSS में PPF से बेहतर रिटर्न मिलता है। PPF पर फिलहाल 7.1% का ब्याज मिल रहा है। वहीं, ELSS मार्केट लिंक्ड है, इसलिए पिछले कुछ सालों में औसतन 10-12% रिटर्न दिया है। लॉक इन पीरियड के मामले में भी श्वरूरू ज्यादा अच्छा ऑप्शन दिखाई देता है। क्योंकि, PPF में 15 साल का लंबा लॉक इन है। वहीं, ELSS में 3 साल बाद विड्रॉल संभव है।

निर्भर स्कीम चयन एवं बाजार जोखिम पर, निवेश करने से पहले ऑफर दस्तावेज पूर्णरूप से पढ़ लें।

हर व्यक्ति को जरूर करने चाहिए ये 5 काम, ताकि आपके बाद आपका पैसा अनक्लेम्ड ना रह जाये

बैंक में हर किसी का खाता होता है। तमाम लोग बैंक के जरिए एफडी, आरडी और सरकार की ओर से चलाई जाने वाली तमाम स्कीम्स में निवेश करते हैं। नौकरीपेशा की सैलरी बैंक अकाउंट में ही क्रेडिट होती है, इसके अलावा तमाम सरकारी योजनाओं का लाभ भी बैंक के जरिए ही मिलता है। ऐसे में बैंक के पास किसी न किसी रूप में आपका पैसा रहता है। आप जब तक जीवित हैं, उस पैसे के मालिक होते हैं। लेकिन अगर किसी दुर्घटनावश आपकी मृत्यु हो जाए तो उस पैसे के हकदार आपके परिवारी सदस्य होते हैं। लेकिन कई बार आपकी कुछ गलतियों के कारण आपके बाद उस रकम को क्लेम करना परिवार के लिए मुश्किल हो जाता है।

ऐसे में वो पैसा बैंक के पास ही रहता है और कुछ सालों बाद उस रकम को अनक्लेम्ड अमाउंट मान लिया जाता है। हाल ही में वित्त राज्य मंत्री भागवत के कराड ने राज्यसभा में बताया कि मार्च, 2023 तक बैंकों के पास बिना दावे की जमा रकम में 28 फीसदी की सालाना बढ़ोतरी हो रही है। इसमें करंट, सेविंग्स अकाउंट का पैसा और फिक्स्ड डिपॉजिट वगैरह का पैसा भी शामिल है। इसलिए बैंक में अकाउंट खुलवाने या किसी भी स्कीम में निवेश करने से पहले हमें 5 काम जरूर कर लेने चाहिए ताकि बाद में परिवार को किसी तरह की समस्या न झेलनी पड़े और आपकी जमा पूंजी अनक्लेम्ड न बन पाए।

नॉमिनी जरूर बनाएं

आप बैंक अकाउंट ओपन कराएं या किसी स्कीम में निवेश करें, उसमें नॉमिनी की डीटेल्स जरूर दें। तमाम लोग नॉमिनी को सीरियस नहीं लेते,

ऐसे में आपके बाद इसका खामियाजा परिवार के सदस्यों को उठाना पड़ता है। नॉमिनी को ये अधिकार होता है कि वो आपकी मृत्यु के बाद उस अकाउंट से पैसा निकाल सकें।

परिवार के साथ निवेश का जिक्र करें

काफी लोग निवेश से जुड़ी बातों को परिवार के सदस्यों से भी छिपाकर रखते हैं, लेकिन जो भी आप पर निर्भर परिवारीजन हैं, आपको उनके साथ इस बात को शेयर करना चाहिए। लाइफ में अनहोनी की स्थिति किसी के भी सामने आ सकती है। ऐसे में अगर परिवार को आपके निवेश और नॉमिनी से जुड़ी जानकारी होगी, तो आपके बाद वो आपकी जमा रकम को निकाल सकते हैं और उसका जरूरत के समय में इस्तेमाल कर सकते हैं।

अनावश्यक खातों को बंद करें

समय-समय पर अपने खातों की समीक्षा सभी को करते रहना चाहिए और अनावश्यक खातों को बंद कर देना चाहिए। सक्रिय खातों में धनराशि कंसॉलिडेट करें। इससे फाइनेंशियल मैनेजमेंट आसान हो जाता है और आपके बाद आपके नॉमिनी को भी बहुत परेशान नहीं होना पड़ता।

अपना केवाईसी अपडेट करें

बैंक आपको समय-समय पर केवाईसी अपडेट करने के लिए कहता है, लेकिन लोग इस मामले में आलस करते हैं। इस काम को अपनी जिम्मेदारी मानकर पूरा करना चाहिए। इससे आपके या नामांकित व्यक्ति के बीच बैंक बिना किसी रुकावट के कम्यूनिकेशन कर पाता है। इससे आपका पैसा लावारिस होने से बच जाता है।

डॉक्यूमेंट्स संभालकर रखें

फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) हो या कोई अन्य स्कीम, आप उनसे जुड़े कागजात को संभालकर रखें। साथ ही जहां भी आप न कागजात को रखते हैं, उसके बारे में अपने परिवार के सदस्यों को जानकारी जरूर दें। इन डॉक्यूमेंट्स के होने से आपके बाद परिवार के लोगों को या नामित व्यक्ति को रकम निकासी के लिए बहुत मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी और काम आसानी से हो जाएगा।

बचत करने के लिए खर्चों पर नियंत्रण करना है बेहद जरूरी

बढ़ती महंगाई, बढ़ती जिम्मेदारियां और बढ़ते खर्चों के बीच बचत कर पाना बेहद मुश्किल हो गया है, उस पर आमदनी इतनी तेजी से नहीं बढ़ती, जितनी तेजी से महंगाई बढ़ रही है। ऐसे में हर कोई यही सोचता है कि क्या किया जाए? लेकिन यदि आप थोडी-सी समझदारी से काम लेकर अपने खर्चों को प्लान करें, तो बहुत हद तक उन पर नियंत्रण पाकर बचत कर सकते हैं।

1. खर्चों की लिस्ट बनाएं

सैलरी आने के बाद सबसे पहले उन चीजों की लिस्ट बनाएं, जो आपकी जरूरत है और लगभग कितना धन खर्च होगा, उसकी गणना करें। अब बचे हुए धन में से एक निश्चित धनराशि को ऑटो स्वीप अमाउंट में लगा दें। तो बैंक ऑटोमेटिक फिक्स्ड डिपॉजिट बुक कर देगा।

2. कुछ भी खरीदने से पहले दो बार सोचें

बाजार हो या इंटरनेट बैंकिंग, कुछ भी खरीदने से पहले दो बार सोचें और खरीदते समय अपने आने वाले खर्चों को जहन में जरूर लाएं।

3. क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कम करें क्र

क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कम से कम करें, क्योंकि यह आपकी अगले महीने की सैलरी पर अचानक बड़ा दबाव डाल सकता है, जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है।

4. डेबिट कार्ड का इस्तेमाल भी कम करें

अक्सर लोग डेबिट कार्ड को अंधाधुंध तरीके से इस्तेमाल करते हैं और जब महीने का अंत आता है, तब देखते हैं कि अकाउंट में पैसा बहुत कम रह गया है। तब अकसर आपके कई सारे बिल पेंडिंग हो जाते हैं।

5. खर्च की सूची बनाएं

जो कुछ भी आप रोज खर्च करें, कुछ भी खरीदें उसकी सूची बनाएं। इससे हर महीने आपको पता चल सकेगा कि आपने फिजूल खर्च कितना किया है?

6. लग्जरी आईटम पर लगाएं लगाम

लग्जरी आईटम खरीदने पर लगाम कसें, क्योंकि ये वो चीजें हैं, जिन पर लोग अचानक खर्च कर देते हैं और फिर बाद में पछताते हैं।

डिस्क्लेमर

निवेश पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से बाजारों एवं कॉरपोरेट जगत के घटनाक्रमों की निष्पक्ष तस्वीर पेश करने का प्रयास किया गया है। निवेश पत्रिका के नियंत्रण एवं जानकारी से परे परिस्थितियों के कारण वास्तविक घटनाक्रम भिन्न हो सकते हैं। निवेश पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्टों के आधार पर पाठकों द्वारा किए जाने वाले निवेश और लिए जाने वाले करोबारी निर्णयों के लिए निवेश पत्रिका कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है। पाठकों से स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा की जाती है।

- संपादकः रमेशचन्द मालू

Invest in Tax Saving (ELSS) Schemes, and 54 EC Bonds

Invest for 80C ELSS, Capital Gain 54EC Bonds.

Invest With Better Mutul Fund Distributor
Having Experience of 30 Years

Mob.: 98290-06801/98290-99899/98290-40424

पी.पी.एफ. खाता धारक सचेत रहकर समय पर जमा करायें

अगर आपका पी.पी.एफ. (पब्लिक प्रोविडेंट खाता) जिस भी बैंक और डाकघर में है, उसमें वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए मिनिमम जमा राशि 500/- रु. एवं अधिकतम राशि 150000/- रु. है, अतः 31 मार्च 2024 से पहले जमा कराये और पेनल्टी से बचे।

भारत सरकार द्वारा 1 नवम्बर 2011 से पी.पी.एफ. में जमा कराने हेतु अभिकर्ताओं को हटा दिया गया है। अतः आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी सुविधानुसार शीघ्र जमा करवा देवें।

बचत योजनाओं की संपूर्ण जानकारी हेतु सेमीनार के लिए रजिस्ट्रेशन कराये

98290-40924
75680-90258

इस 'वैलेंटाइन डे' पर अपने पार्टनर को दें खास फाइनेंशियल गिफ्ट्स, भविष्य होगा सुरक्षित

फरवरी को प्यार का महीना कहा जाता है। ऐसे में प्यार को सेलिब्रेट करने का खास दिन वैलेंटाइन डे है। इस दिन का कपल बड़ी ही बेसब्री से इंतजार करते हैं। उनकी चाहत होती है कि वो किसी न किसी तरह अपने पार्टनर को स्पेशल फील करवाने के लिए बेहतर से बेहतर गिफ्ट दें ताकि उसे जिंदगी भर याद रहे। आप वैसे तो गिफ्ट्स में ज्वैलरी, कपड़े, परफ्यूम जैसी कई चीजें दे सकते हैं। मगर कोरोना महामारी के बाद अब लोगों ने फाइनेंशियल हेल्थ को अहमियत देना शुरू कर दिया है। ऐसे में अगर आप भी वैलेंटाइन डे के खास मौके पर अपने पार्टनर को फाइनेंशियल सिक्योरिटी देना चाहते हैं तो हम आपको कुछ खास फाइनेंशियल गिफ्ट्स के बारे में बताने जा रहे हैं।

पार्टनर को दें फाइनेंशियल सिक्योरिटी

आमतौर पर देखा गया है कि कपल्स के बीच फाइनेंस को लेकर ज्यादा बातचीत नहीं होती। महिलाएं आमतौर पर फाइनेंशियल नॉलेज से बहुत दूर रहती हैं। ऐसे में इस वैलेंटाइन डे के खास मौके पर आप अपने पार्टनर को अपने सभी इन्वेस्टमेंट के बारे में जानकारी दें। ऐसा करने से इमरजेंसी के समय आपका पार्टनर सही तरीके से मनी रिलेटेड फैसले ले सकेगा। इसके साथ ही उन्हें लोन, क्रेडिट कार्ड जैसी फाइनेंस से जुडी चीजों के बारे में बेहतर जानकारी मिल पाएगी।

पार्टनर के लिए करें लॉन्ग टर्म इन्वेस्टमेंट

आप अपने पार्टनर को बेहतर फाइनेंशियल सिक्योरिटी देने के लिए आप लॉग टर्म इन्वेस्टमेंट प्लान में इन्वेस्ट कर सकते हैं। इसके लिए आप पार्टनर के नाम पर म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे लाभकारी प्लान में निवेश कर सकते हैं।

म्यूचुअल फंड में आप पार्टनर के लिए SIP के जरिए निवेश कर सकते हैं। जिससे भविष्य में बेहतर रिटर्न पाया जा सकता है।

गोल्ड बॉन्ड करे गिफ्ट

महिलाओं को गोल्ड काफी पसंद है। अगर आपको अपनी पत्नी के लिए कुछ अच्छा गिफ्ट देना है तो गोल्ड बॉन्ड दिए जा सकते हैं। सोने की कीमत भी धीरे-धीरे बढ़ती ही जाती है। ऐसे में महिलाओं को स्कीम पसंद भी आयेगी और बेहतर रिटर्न मिल सकेगा।

पार्टनर का कराएं इंश्योरेंस

आजकल के समय में हर किसी के लिए लाइफ इंश्योरेंस कराना बहुत जरुरी है। अगर आप भी अपने पार्टनर को वैलेंटाइन डे के खास मौके पर कोई शानदार फाइनेंशियल गिफ्ट देना चाहते हैं तो इंश्योरेंस पॉलिसी के बेहतर ऑप्शन है। जीवन बीमा पॉलिसी आपके पार्टनर को बुरे वक्त में एक मजबूत फाइनेंशियल हेल्प देने में मदद करता है।

एसआईपी में टॉप-अप करना है समझदारी भरा फैसला

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान या एसआईपी म्यूचुअल फंड में निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका है। जैसे-जैसे आपकी आमदनी बढ़ती है वैसे-वैसे नियमित अंतराल पर अपनी एसआईपी की राशि बढ़ाना निवेश का समझदार तरीका है। म्यूचुअल फंड की एसआईपी राशि को बढ़ाना ही टॉप अप कहलाता है। आप अपने एजेंट के जरिए या फिर ऑनलाइन भी एसआईपी में टॉप-अप कर सकते हैं।

एसआईपी टॉप अप के फायदे

1. वित्तीय लक्ष्यों की जल्द प्राप्तिः अगर आप नियमित रूप से अपनी एसआईपी में टॉप-अप करते हैं तो वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित समयसीमा से पहले हासिल कर सकते हैं। निर्धारित समय पर आपको ज्यादा मेच्योरिटी राशि मिलेगी।

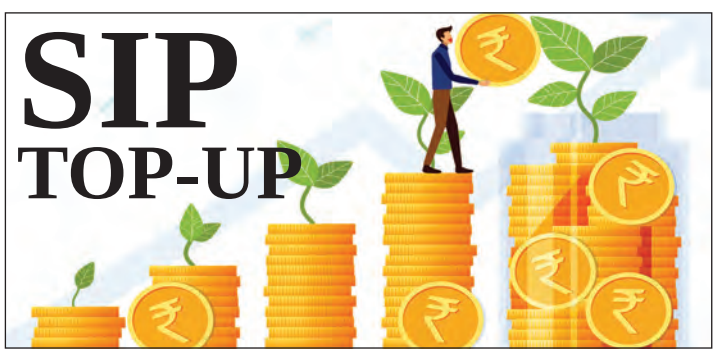

2. महंगाई से बचावः हर साल महंगाई बढ़ने से आपके निवेश का मूल्य घटता रहता है। यदि औसत महंगाई दर 6% मानें तो आपको निर्धारित समय सीमा पर अपेक्षित मैच्युरिटी राशि पाने के लिए हर साल एसआईपी में कम से कम 6% का टॉप-अप करना चाहिए।

3. **तेज कंपाउंडिंगः** स्वाभाविक रूप से यदि एसआईपी की राशि बढ़ती है तो उस पर कंपाउंडिंग की दर भी ज्यादा तेज होगी और आपका निवेश पहले से ज्यादा तेज गति से बढ़ेगा।

 # Mutual fund investment are subject to market risk, read all scheme related document carefully

स्वतत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक रमेश चन्द मालू द्वारा मोहन शर्मा एण्ड कंपनी प्रा.लि.ए-10, सुदर्शनपुरा औधोगिक क्षेत्र जयपुर से मुद्रित एवं 103 प्रथम मंजिल, बृज अनुकम्पा, बीएसएनएल के सामने, अशोक मार्ग, सी-स्कीम जयपुर-302001 से प्रकाशित। सम्पादक : रमेश चन्द मालू मो. 98290-40524, 98290-66601
ई-मेल : niveshpatrika@mftoday.com वेबसाईट www.mftoday.com